वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2017

* मात – पिता का सम्बन्ध
* मेरे श्रद्धेय पिता जी का एक महान उपकार
* पुस्तक के पाठ से लाभ
* जान निस्सार माता का एक विशेष उपकार
* चण्डगीढ में माता – पिता सम्बन्धी विशेष साधन
* मात – पिता एवं सन्तान दिवस
* मां बनकर देखो
* देने का सुख
* जीवन में गुणचिन्तन और उपकार स्मरण की आवश्यकता

माता – पिता – सन्तान सम्बन्धी पूजनीय भगवान के आदेशों के आधार पर

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सर्वप्रथम माता पिता को अपनी सन्तान के सम्बन्ध में किन आदेशों का पालन करना चाहिए, वह आदेश दिए हैं, वह संक्षेप में इस प्रकार हैं: –

प्रत्येक माता – पिता अपनी सन्तान को अपने अस्तित्व का अंश जानकर उसके साथ अपना उचित सम्बन्ध अनुभव करें। उनको प्रत्येक नीच गति से मुक्त रखने और उच्च गति दायक भाव के द्वारा उसके साथ सम्बन्ध उत्पन्न वा उन्नत करने की आवश्यकता को अनुभव करें। मोह रहित सन्तान के साथ स्नेह प्रदर्शन करें। बिना किसी पक्षपात के पुत्र और पुत्रियों का पालन करें। उनकी शरीर को अपनी अवस्था के अनुसार विकसित करने और उसे रोग मुक्त करने का यत्न करें। युवा अवस्था तक उसकी भली भान्त पालन करें, किसी विकलांग वा असहाय सन्तान का आयु भर के लिए रक्षा पालन का प्रबन्ध करें।

प्रत्येक सन्तान की अपनी सामर्थ्य के अनुसार मान्सिक उन्नति, भाषाओं और साधारण ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा दें। उन्हें अपनी सामर्थ्य अनुसार विविध प्रकार के खेलों, सवारी, व्यायाम, पाकक्रिया, वाद्य, गान, नृत्य, चित्रांकन, शिल्प, चिकित्सा आदि नाना व्यवसाओं और वाणिज्य आदि की शिक्षा दें।

अपनी सन्तान को आत्मा की गठन और उसकी विनाश और विकासकारी गतियों, सत्य धर्म और उसके लक्षणों और साधनों आदि के विषय में उचित रूप से शिक्षा दें, नाना सात्विक भावों को विकसित करने और नीच गतियों के प्रति घृणा वर्धन करने की चेष्टा करें।

अपनी सन्तान को अपने उपार्जित धन वा सम्पति को विशेष सीमा तक ही दें, बाकी किसी हितकर कार्य में दान में दें।

यदि अपनी सन्तान को कोई दण्ड देना उचित हो तो अपने अधिकार, उसकी आयु और अवस्था के अनुसार ही दें। यदि उन्हें अपनी सन्तान के प्रति अपनी किसी अनुचित क्रिया का बोध हो तो उसका उचित परिशोध करके अपने परस्पर सम्बन्ध को पवित्र करें। अपनी योग्यता अनुसार उनके हर प्रकार से मंगल की कामना करें।

माता – पिता अपनी सन्तान पर उचित रूप से शासन करने से उदासीन न रहें। अपने स्नेह भाव से परिचालित होकर अपनी सन्तान की ऐसी रूचि वा वासना का साथ न दें, जिससे सुचरित्र को हानि पहुँच सकती हो। अपनी सन्तान को साक्षात वा असाक्षात रूप से कोई ऐसी शिक्षा न दें, जिसको आप असत्य, पाप वा अपराध मूलक जानते हों।

यहां तक सम्भव को सन्तान को अनुशासित करने में शारीरिक दण्ड न दें।

सन्तान के लिए

प्रत्येक सन्तान के लिए आवश्यक है कि वह अपने माता – पिता को अपना जन्मदाता, पालन कर्ता, रक्षाकर्ता, और शिक्षा दाता उपलब्ध करके उनके साथ अपना अति, घनिष्ट सम्बन्ध अनुभव करे और अपने आपको उनके प्रति सब प्रकार की नीच गतियों से मुक्त रखकर उच्च गति दायक प्रत्येक भाव को उन्नत करे। अपने माता पिता के प्रति उचित सन्मान प्रदर्शन करे, माता – पिता के अतिरिक्त अपने वंशगत प्रत्येक सम्बन्धी के प्रति भी उचित रूप से सन्मान प्रदर्शन करे।

शेष पृष्ठ 19 पर

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 2
फरवरी 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

माता – पिता का सम्बन्ध

आजकल माता - पिता सन्तान यज्ञ के दिन चल रहे हैं। देव धर्म की आत्मा के सम्बन्ध में शिक्षा किसी को समझनी बहुत कठिन है, परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने जो 16 सम्बन्धों में शिक्षा प्रदान की है, उसकी कुछ न कुछ समझ साधारण मनुष्यों को भी आ जाती है। कई पुराने सेवकों से सम्बन्धित जन भी जब हम जैसे देव समाजी जनों का परिचय करवाते हैं, तो अक्सर मुझे यह सुनने को मिला है कि यह समाज सम्बन्धों को बेहतर करती है। यह इसलिए कि सम्बन्धों में बेहतरी मोटी बुद्धि से भी समझ आती है।

16 सम्बन्धों की शिक्षा में पूजनीय भगवान ने सर्वप्रथम माता - पिता - सन्तान को स्थान दिया है। वह इसलिए कि माता पिता हैं, तो हम हैं। हमारी हस्ती का आगाज़ ही उनसे है। परन्तु माता पिता के सम्बन्ध में बच्चों की जो हालत है, उसको देखकर ऐसे लगता है, बच्चे उनके उपकारों और सेवाओं के प्रति बिल्कुल अन्धे हो चुके हैं।

मनुष्य पशुओं से विकसित हुआ है। पशु का अपनी मां से तब तक ही सम्बन्ध होता जब उसे दूध या दाना दुनका देती है। वह स्वार्थ का भाव मनुष्यों को विरासत में मिला है। माता पिता किस कठिनाई में से गुजरकर बच्चों को पालते हैं। गरीब होकर भी अपना पेट काट काट कर बच्चे को हर सुख प्रदान करने का भरसक प्रयत्न करते हैं। आर्थिक तंगी में भी अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ाने का यत्न करते हैं। बिमारी में घर बार बेचकर भी बच्चे की जान बचाते हैं। घरों में मजदूरी करते हैं, लोगों से अपमान सहते हैं। माता पिता की कुर्बानी को इन चन्द शब्दों में लिखना असम्भव है। जन्म से लेकर जवानी तक माता पिता बच्चों के लिए तिल तिल कुर्बान होते हैं। मैं अपने जीवन में देखती हूं कि मेरे पिता किस क़दर दमे के मरीज़ होकर पूरी पूरी रात जागकर, सुबह फिर काम करने वालों के पीछे भागते थे, मेरी माता जो बहुत नज़ाकत में पली थी, यू.पी. के जंगल में शेरों के प्रतिदिन के भय में रात रात लालटेन लेकर मजदूरों के पीछे जाती, जब वह गन्ने से राब बनाते थे। यह सब किस लिए केवल हम बच्चों के लिए, हमें अच्छे वस्त्र, अच्छी शिक्षा देने के लिए। आज हम जो कुछ भी हैं, उनकी कुर्बानी का फल है। केवल पाला, पोसा ही नहीं, दिल दिमाग़, शरीर की अच्छी पूंजी दी है, जिसका कोई मोल ही नहीं। गुरू महाराज की अपार कृपा है, जो हम सब बहन भाई उनके ऋणी अनुभव करते हैं

और सुख दुख में सदा भागीदार रहे हैं।

यह माता पिता की कुर्बानी की कहानी हर घर में है। हमारे पड़ोस में एक मकान बन रहा है। वहां एक दृश्य ने हमारे दिल पर गहरा असर किया। दो नौजवान लड़कियां, जिनके बच्चे 5 - 6 महीने के लग रहे थे, उन्होंने उन्हें पीछे बांधा हुआ था और उस बोझ को खुशी खुशी उठाए हुए, वह सुबह 9 बजे से शाम के 5 बजे तक मजदूरी करती, सिर पर बोझ ढोती, कभी सीढियां चढ़ती, कभी उतरती, अब वह बच्चे क्या समझ सकते हैं, कि उनकी माता ने उन्हें पालने में क्या कष्ट उठाए हैं। यही बच्चे यदि बड़े होकर मां का अपमान करें या उसका बुढ़ापे में ख़्याल न रखें तो इससे बड़ा नर्क क्या हो सकता है।

एक कहानी है, वह कहां तक सच्ची है, पर यदि कल्पना भी हो, तो मां के रूप की अद्भुत कल्पना है। बीरबल जो अकबर राजा के दरबार के नौ रत्नों में से बेहद बुद्धिमान थे। उसकी माता को किसी पंडित ने बता दिया कि यदि तुम्हारा बच्चा फलां दिन हुआ तो वह रंक बनेगा, यदि उसके दो दिन बाद हुआ तो वह बहुत बड़ी पदवी पाएगा। बताया जाता है कि बच्चे के जन्म का समय हो गया, परन्तु मां ने ज़ोर दिया कि उसे उल्टे लटकाया जाए, जब तक भविष्य बाणी के अनुसार समय नहीं होता, ऐसा ही किया गया और उसने उसी निरधारित समय पर बीरबल को जन्म दिया। जन्म के साथ समय को कोई महत्व हो न हो, परन्तु अपने बच्चे के उज्जवल भविष्य के लिए मां की कुर्बानी का मुकाबला करना भी कठिन है। माता पिता की कुर्बानियों की कोई सीमा नहीं बांध सकता। बाबर ने अपने बेटे के लिए अपनी मौत को स्वीकार किया।

ऐसे कुर्बानी करने वाले, ऐसे दाता, ऐसे बच्चों के लिए फनाह होने वाले माता पिता अनाद्रित हैं, तिरस्कृत हैं, वह old home में बच्चों के मुंह देखने को तरसते हैं। यह क्यों है, इसलिए कि मनुष्य में स्वार्थ नस नस में भरा हुआ है। जब तक माता - पिता से स्वार्थ पूरा होता है तो बच्चे उनके साथ हैं, जब उनका स्वार्थ पूरा हो जाता है, तो माता पिता की सब कुर्बानी और त्याग बच्चे भूल जाते हैं। यही कारण है कि कितने वरिष्ट रिटायरड अफसरों को अपने बच्चों के अपमान से बचने के लिए कचहरियों का सहारा लेना पड़ता है। अपने ही घर में वह बेगाने हो जाते हैं। कितनी उदाहरणे हैं कि माता पिता की अपनी बनाई जायदाद को हथियाने के लिए माता पिता का कत्ल कर दिया जाता है। घर घर में नर्क के नज़ारे देखने को मिलते हैं।

परम पूजनीय भगवान की अपार कृपा जिन पर होती है, उनके देव प्रभावों में बैठने का जिनको सौभाग्य मिल जाता है, उनकी हृदय की आंखों का मोतिया बिंद उतर जाता है। उन्हें माता पिता के उपकार नज़र आने लगते हैं, अपनी उनके प्रति की गल्तियां, नीचताएं नज़र आती हैं, वह माता पिता के पैरों पर गिरकर क्षमा प्रार्थना करने के लिए मजबूर हो जाते हैं, कई सौभाग्यवान जन उनके चरण धोने, उनका चरणामृत लेने, उन्हें उपहार देने के लिए विवश हो जाते हैं, एक एक घर में यह स्वर्गिय दृश्य पैदा हुए हैं और हो रहे हैं।

इसलिए अकसर देव समाज में भी कई माता पिता स्वंय संगत में आएं या न आएं, वह चाहते हैं कि बच्चे जाऐं ताकि उनका व्यवहार उनके प्रति सन्मान पूर्वक हो।

परम पूजनीय भगवान ने केवल माता पिता

ही नहीं दिखाए, बच्चों के प्रति माता पिता के क्या कर्तव्य हैं, उनकी शिक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण बताई। बच्चों को बचपन से ही कैसे पाला जाए, कैसे उन्हें अनुशासन सिखाया जाए, कैसे दूसरों के लिए कुछ करने का भाव जाग्रित किया जाए, कैसे बड़ों का सन्मान किया जाए, इसके प्रति माता पिता को भी सचेत किया है।

धन्य हैं सत्गुरू ने जिन्होंने इतनी बारीकी से माता पिता और सन्तान के सम्बन्ध में मनुष्य की हालत को देखा और इस सम्बन्ध को स्वर्गिय बनाने के लिए अमूल्य शिक्षा दी है, काश! हम कुछ न कुछ उन आदेशों का अनुसरण कर सकें।

सुरजीत बराड़

दस्तक

बस, यही एक शब्द काफ़ी है
वात्सल्य को चेहरा देने के लिए।
इत्मीनान की सांस के मायने समझने....
और हक़ से हक़ जताने के लिए।
थकान को भूल जाने,
और पैर समेटकर सोने का सुकून पाने के लिए।
गर्मागर्म भोजन का सुख समझने,
और अचार,, मुरब्बे, चटनी के चटख़ारों के आनंद के लिए।
उस के अहसास से परे जाकर
हाथ से निवाला खाने के चिर बालपनी सुख के लिए।
गोद में सिर रखकर घंटों बतियाने,
बिना सोचे-समझे कुछ भी कह पाने के लिए।
जीते कंचे, लूटी पतंगे छुपाने,
और हर राज़ बता देने के भरोसे के लिए।
कभी-कभी ठुनकने रूठने,
और सचमुच, खुलकर आंसू बहाने की निश्चिंतता के लिए।
और जब छल के आक्रमणों की आशंका सताए,
तब ऐतबार को केवल इसी नाम से पुकारने के लिए।
मां....
यही नाम काफी है।

मेरे श्रद्धेय पिता जी का एक महान उपकार

जब मैंने होश सम्भाली मेरे पिता बजुरग, साधारण किसान थे। वह गांव के नम्बरदार थे। कई पीढ़ियों से हमारे घर में नम्बरदारी थी। मैं 14 वर्ष के लगभग था, जब वह इस संसार से चले गए। बताया जाता है कि उस समय 65 - 68 वर्ष के थे। वह आखिरी समय में बहुत दुर्बल, लगभग नेत्रहीन, एकांतवासी और दुखी रहते थे। उनकी मौत किसी विशेष रोग से नहीं हुई थी, नेचरल थी। वह पंजाबी गुरू ग्रन्थ साहिब और वाणी का पाठ कर सकते थे। इससे अधिक विद्या - प्राप्ति का उन दिनों कोई साधन नहीं था। वह बहुत ही sensative अर्थात संवेदनशील व्यक्ति थे। उनके माता - पिता की मृत्यु, जब वह 16 वर्ष के थे, तभी हो गई थी। इस सदमें के अलावा उनके 2 सगे भाई, दो सगी बहनों और एक भानजा भरी जवानी में चल बसे थे। उक्त मौतों का गहरा सदमा, सारी उमर उनके लिए बोझ बना रहा। वह अकसर उन सबको याद करके अकेले में वैण पा पाकर रोते रहते थे। उन्होंने अपनी बहुत सुन्दर विरासत देखी हुई थी। मेरी दादी, पड़दादी के साथ एक एक या दो दो बांदीयां (नौकरानियां) उनके ससुराल में साथ गई थी। वह उनकी सब प्रकार से छोटी से छोटी सेवा करती थी। उनकी भुआ उस घर में ब्याह कर गई थी, जिसमें नाभा या पटियाला के राजा ब्याहे हुए थे। एक बार हाथियों पर सवार दोनों रियासतों के राजा हमारे घर आए थे, जब मेरे पड़दादा जिन्दा थे। मेरे पिता भी कुछ सम्मानित व्यक्तियों के साथ इन राजाओं की शादियों में विशेष पोशाक पहनकर जाया करते थे। परन्तु धीरे धीरे पिता जी इन सदमों से बहुत बेकसी की हालत में और बहुत डिप्रैशन में इस दुनियां से विदा हुए। उनकी जितनी भी हालत मुझे याद है, उसको याद करके बहुत दुख होता है और कई बार मेरे आंसू निकल आते हैं।

कई वर्षों से मैं साधन में पिता जी को याद करता हूं। उनकी तरफ से और पूर्वजों से मिली कुछ अच्छी पूंजी के लिए, प्रतिदिन उनके चरणों में सजदा करता हूं, इससे उच्च रस से भर जाता हूं। कुछ दिन पहले ऐसे ही जब मैं पिता जी को याद कर रहा था, उनसे मिली विरासत में मिली सात्विक भावों की पूंजी के लिए उन्हें धन्यवाद दे रहा था, तो अचानक उनके जीवन की एक घटना मेरे सामने आई तो मैं विलख़ विलख़ कर रोने लगा और उनके चरणों में झुकने लगा, जिस भावना से उनके जीवन में यह घटना घटी थी, उसका कुछ अंश अपने भीतर देखकर, उनके आगे बड़ी देर तक झुकता रहा। मेरा हृदय उच्च रस वा विनम्रता से भरकर जैसे स्वर्गिय हालत में पहुंच गया था, उसको मेरे लिए शब्दों में ब्यान करना कठिन है।

बताया जाता है कि हमारी हर पीढ़ी का एक जन साधु बनता है, तीन पीढ़ियों का तो मुझे पूरा पता है। मेरे श्रद्धेय दादा जी के एक सगे भाई, घर बार छोड़कर साधू बन गए थे। उनके त्याग और सम्बन्ध को लेकर मेरे श्रद्धेय पिता जी हर वर्ष अपने साधू चाचा जी को मिलने जाया करते थे। मुझे धुंधली सी याद है कि वह दो कच्छे, एक सुन्दर, नर्म जूतों का जोड़ा

और कुछ न कुछ भेंटें लेकर प्रतिवर्ष जाते थे। कई वर्ष जाते रहने से वह उस डेरे के हर व्यक्ति को जानने, पहचानने लग गए थे। हमरी श्रद्धेय माता जी से हमें सुनने को मिलता था कि नम्बरदार जी अर्थात हमारे पिता जी जब डेरे जाते रहे तो वहां के प्रबन्धक काफी बड़ी राशि उन्हें स्वीकार करने को कहते, कई तो बहुत ज़ोर देकर आग्रह करके उन्हे प्रेरित करते, वह यह कहकर उन्हें धन्यवाद देते कि पूजा के घर का धन मेरे लिए ज़हर हैं, मैं किसी प्रकार भी यह ज़हर अपने बच्चों को नहीं खिला सकता। इस प्रकार डेरे से एक पैसे को भी कभी उन्होंने हाथ नहीं लगाया।

उक्त घटना मन की आंखों को सामने आने से, और देव प्रभावों से हृदय ओत प्रोत होता रहा और मैं काफी लम्बे समय तक इन स्वर्गिय पलों का रस प्राप्त करता रहा, यह सब कुछ अनुभव की चीज़ है, लिखी नहीं जा सकती। मैं इस विरासत को स्वयं के जीवन की घटनाओं में देख देखकर गर्व से भर रहा था। इसके साथ ही मुझे अपने श्रद्धेय दादा जी और अन्य पूर्वजों की यह घटना याद आकर, उनके आगे नतमस्तक कर रही थी कि उन्होंने भी अपने रिश्तेदार राजाओं के घर में आने पर, और राजाओं के द्वारा अपनी अपनी रियासतों के गांवों की बहुत सी ज़मीन देकर साधारण ज़िमीदारी को एक सरदार वा राजा बनाना चाहा था, उस समय भी मेरे श्रद्धा के पात्र पूर्वजों ने इतने बड़े संसारिक लोभ की आफर, अपने ग्रामीण भाईयों से अलग न होने की इच्छा से बड़े सुन्दर ढंग से टाल दी थी। इस त्याग की भावना को जितना भी प्रणाम करूं थोड़ा है। अपने निराले हित विधाता सत्गुरू जी से यह आशीष उनके चरणों में नतमस्तक होकर मांगता हूं कि जहां मैं अपनी पाक विरासत पर नाज़ करता रह सकूं और उनकी कृपा से उस पर सदा पहरा दे सकूं और गुरू धाम के धन, पदार्थों से तिल भर भी अपना स्वार्थ पूर्ति को ज़हर और गंदगी भरी मौत सदा देखता हुआ, अपने उच्च बज़ुर्गों और रूहानी उपकारियों को अच्छी प्रकार से अपना मुंह दिखाता रह सकूं।

बलदेव सिंह

फिर मंदिर नहीं गई....

मां नहीं हैं पर सम्भाले हूं मैं उनका पुराना चश्मा जिससे झांकती उनकी आंखें रोक देती हैं मुझे अगली ग़लती दोहराने से पहले....

कोने से खड़ी बेंत की मूठ पर रखा उनका हाथ, सुझा देता है मुझे राह की अगली ठोकर खाने से पहले.....

चारपाई के नीचे रखी उनकी चप्पलें देती हैं गति, बर्फ़ हो गए मेरे पैरों को.....

सिराहने के नीचे रखा सुई - धागा याद दिला देता है काम करती उनकी उंगलियों की, सतत चलते रहने को मुझे कहता

.... और मां का वह कमरा,

जो बन गया है इबादत का स्थान,

जिसे पाकर मैं फिर कभी मंदिर नहीं गई.....

पुस्तक के पाठ से लाभ

कुछ दिनों से एक पुस्तक "नीच जीवन पर चिन्तन" पाठ कर रहा हूं। इसमें सन्मान के योग्य श्रीमान जी ने अपनी कथा लिखी है। ऐसा लग रहा है भगवान देवात्मा की अपार कृपा से ऐसा संयोग बना, हैरानी हो रही है, इस पुस्तक में जो जीवनी लिखी गई है। श्रीमान जी, जो हमारे, सामने ही हैं, वह भले ही समाज के उच्च पदधारी हैं, उनके बड़प्पन के आगे हम कुछ डरते, कुछ झिझकते भी हैं। उनके द्वारा समाज का बहुत हितकर कार्य भी हो रहा है, परन्तु गुरू महाराज के अद्वितीय प्रभावों के बिना उनकी आत्मा के क्या हालात थे और उनके प्रभावों को पाने का महा सौभाग्य पाकर, उनके जीवन में और उनके व्यवहारों में क्या क्रिश्मे हुए, उसके विषय में उन्होंने स्वंय इस पुस्तक के रूप में लिखा है। यह पुस्तक एक ऐसे महा भयंकर रोग पर लिखी हुई है, जिसके हम सब ही गुलाम हैं, यह रोग हमें इतना मीठा लगता है, हमारे इर्द गिर्द इतना लिपटा हुआ है कि हमें हमारी वास्तिकता की ओर ध्यान जाने नहीं देता। इस रोग में हम अपने आपको सदा ठीक और सही देखते हैं, चाहे हमारे द्वारा कितने ही जनों का अपमान, कितने जनों का कितना ही नुकसान हुआ हो और हो रहा हो फिर भी हम अन्दर से पुकार पुकार कर यही कहेंगे कि मैं ठीक हूं। दूसरे भले कोई भी हों, बड़े हों, उपकारी हों, फिर भी हम श्रद्धा, सन्मान से खाली होकर उन्हें दुख, तकलीफ देते रहेंगे। हम दूसरों के प्रति अपने गल्त व्यवहारों से नर्क पैदा करते हैं, परन्तु ठीक होने का ही दावा करते रहेंगे। ऐसा अन्धेरा हररोज़ हमारे भीतर बढ़ता रहता है। उसी अन्धेरे में हम ठोकरें खाते रहते हैं और दूसरों को भी ठोकरें मारकर दुख देने का कारण बनते रहते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अपार कृपा कि श्रीमान जी (पुस्तक के लेखक) के प्रभावों को पाकर इस महा रोग की तरफ ध्यान गया, उसका परिशोध हुआ और हमारे परम सौभाग्य हमारी प्रेरणा की खातिर ऐसी पुस्तक लिखी गई। पुस्तक के पाठ, विचार से अपनी काली छवि की तरफ ध्यान जाता रहा है, कुछ प्रेरणाएं मिलती रही हैं, कितनी बार अपनी तरफ ध्यान जाकर रोने के लिए मजबूर हुआ हूं। पूजनीय भगवान वा विकासकार वा सहायकारी शक्तियों से यही प्रार्थना है कि ऐसी अवस्था बनी रहे और साथी साधक धर्म सम्बन्धियों से भी यह बेनती है कि अपने साधन में इस पुस्तक का निश्चयपूर्वक पाठ करें।

इस पुस्तक के अध्ययन से दिल की अवस्था कई बार बहुत ही अच्छी बनी, हृदय द्रविभूत हुआ आपने जब कहा कि खुद की कौन सी कमियाँ दिखीं वह लिखो, तो एक बारगी तो माथा ठनक गया कि क्या लिखूं मुझे तो ज्यादा कुछ अपने बारे में दिखा नहीं, फिर मैं क्यों द्रवित हो जाता था इस बारे में ध्यान लेकर गया तो ध्यान आया कि हृदय के द्रवित होने का सबसे बड़ा तत्व ये था कि ज्यूं-ज्यूं में पढ़ता जाता था मुझे ये फील होता था जैसे कि ये सब कहानी मेरी ही है, मेरे जीवन में ये सब घटनाएं घटित हुई हैं, हो रही हैं अथवा मेरे साथ भी ऐसे ही होगा। मेरा भी ऐसा ही परिणाम

होगा, उस समय शुरू के चरणों में बैठकर ऐसे प्रभाव हासिल हो रहे थे और उसमें पुस्तक का अध्ययन ये प्रभाव डालता था कि जैसे मैं मेरी जीवनी पढ़ रहा हूँ। पुस्तक के अध्ययन के द्वारा मुझे अपने अंह की गति भी दिखाई दी।

मेरे नजदीक एक सज्जन जो कि अच्छे प्रभावों मे आकर गुरू के सेवक भी बन गये हैं, मेरे से उमर में भी बड़े हैं परन्तु उनके सामने हंसी मखौल में मुँह से अभद्र भाषा का प्रयोग कर जाता हूं जो कि मुझे काफी फील हुआ व शरमिन्दगी होती रही। कई बार दूसरों की कोई कमी, जैसे कि कोई शरीर के ज्यादा मोटा है अथवा कोई दिमाग से कमजोर है तो उसके बारे में हँसी मजाक कर देना अपने आपको बढ़िया सुन्दर व समझदार मानकर ऐसी क्रिया करना नज़र आकर दिल शरमिन्दा हो रहा था।

काफी सारे व्यवहारों में अपना झूठ मारना व कपटता करना नज़र आ रहा था।

अपनी तरफ से अपने जीवन से दूसरों पर अच्छे प्रभाव पहुँचाने की बजाय उन पर नीच प्रभाव छोड़ने जैसा फील होता रहा। अपने शरीर के प्रति भी उचित नियमों का पालना न करना, सैर व्यायाम, खान आदि में लापरवाही फील होती रहती है।

आपने जितनी बार भी कुछ होमवर्क दिया है वो भी मेरे भले के लिए हर बार बहुत लेट करके अथवा ना करके आपको भी बहुत बार निराश किया है, मुझे ऐसा लगता है कि मेरा वातावरण मुझ पर बहुत हावी है, इस बारे में मैं बहुत कमजोर हूँ जो गफलत में रहने के लिए मजबूर हूँ, सहायकारी शक्तियाँ कृपा करें।

अति तुच्छ
गोपाल कृष्ण (गंगानगर)

माता – पिता और बड़ो के साथ बांटिए समय देने का सुख

हमने बचपन में गिरकर संभलना और उठकर चलना कैसे सीखा, हमें किसने इशारों में जिंदगी का पाठ पढ़ा दिया। जिन्होंने कदम - कदम पर हमारी राह रोशन की, वे हमारे माता - पिता ही तो हैं। वे हर पल हमें कुछ न कुछ देते रहे। कभी आर्शीवाद तो कभी प्यार। अब बारी आपकी है। तय कर लें आप आज से मां - बाबूजी के साथ न सिर्फ वक्त बिताएंगे बल्कि उन्हें अपना प्यार भी देंगे। आपका दिया हुआ यही समय तब आपके पास लौटकर आएगा जब आप खुद उनकी जगह लेंगे। आपकी यह शुरूआत आपके बच्चों तक पहुंचेगी। निश्चित ही इसमें आपको अलग ही तरह का सुख मिलेगा। माता - पिता की खुशी से सराबोर आंखें आपको यह अहसास करा देंगी कि हां, मैं दुनिया की सबसे सौभाग्यशाली और लायक संतान हूं।

जान निस्सार माता का एक विशेष उपकार

माताएं सब की ही, लाखों मे से एक आध को छोड़कर, जान-निस्सार करने वाली होती हैं। वह सदा अपनी जान से भी बढ़कर अपने ज़िगर के टुकड़ों की जान वा ख़ैर सुख को पहल देती हैं। मेरी पालना, रक्षा के लिए मेरी जन्म दाता की कुर्बानियों की गाथा भी अति महान और अनोखी है, पर यहां मैं अपने दादा, पिता की तरह ही अपनी मां की विशाल हृदयता ने जो हम पर उपकार किया, उस त्याग की विरासत ने ही हमें कुछ त्याग करने के योग्य बनाया है, उसके विषय में लिख रहा हूं।

बताया जाता है कि मेरे दादा जी, पड़दादा जी ने तो बहुत खुशहाल दिन देखे थे, राजों महाराजों से रिश्तों की सांझ भी थी परन्तु जब हम छोटे बालक थे, हमारी विधवा मां को बड़ी ही तंगी के हालातों में से गुज़रना पड़ा और कठिन परिश्रम करना पड़ा।

हमारे श्रद्धेय माता जी के दादा जी आनरेरी मैजिस्ट्रेट थे और पिता एक पुलिस अफसर थे। हमारे नानी जी हमारी माता को जन्म देते ही परलोक सिधार गई थी। नाना, नानी भी परलोक चले गए । मेरे पिता जी का दिल उचाट हो गया, और वह नौकरी छोड़कर रंगून चले गए, वहां जाकर भी पुलिस की नौकरी की। वहां पर बहुत से लोगों को उन्होंने कर्ज़ दे रखा था, उन कर्ज़दारों ने उनका कत्ल कर दिया। इस प्रकार जवानी में ही वह भी चल बसे। उनकी गैरहाज़री में माता जी को मामा जी आदि ने ही पाला, इसलिए बहुत छोटी उमर में उनकी शादी कर दी। एक सन्दूक जिसमें कपड़े और जेवरात थे पिता ने किसी के हाथ भेजे, परन्तु वह रास्ते में ही उसने इधर उधर कर दिए और लगभग खाली सन्दूक ही उनके हाथ लगा। मामा जी का भी जल्दी ही देहान्त हो गया। माता जी का कोई सम्बन्ध पिता, दादा आदि के घर से न रहा। माता के निकटी सम्बन्धियों ने सब कुछ सम्भाल लिया, माता जी का किसी ने पता लेने का भी कष्ट न किया। बेशक जब तक पिता जिन्दा रहे, जब वह छुट्टी आते तो माता जी बाल, बच्चों समेत, दो बार पिता जी के पास महीना वा 20 दिन रहीं। पिता जी की मौत की ख़बर बहुत देर के बाद मिली, फिर रिश्तेदारों की ओर किसी ने उनकी ख़बर न ली।

हालात ने ऐसी करवट ली कि देश का बंटवारा हो गया, पैप्सू बन गया। बरनाला शहर जहां माता जी का मायका था, अर्थात हमारे नानके थे, पैप्सू में आ गया। ऐसा इतफाक हुआ कि हमारे बहुत ही निकटी सम्बन्धी जो A.S.P. भर्ती हुए थे, पैप्सू में पुलीस इंस्पैक्टर बनकर बरनाला आ गए। पैप्सू के कनून के अनुसार अनाथ बेटी अपने पिता की वारिस होती है। उन्होंने सारे हालात जानकर माता जी को प्रेरणा दी कि यदि तुम चाहो तो मैं आपको आपके बाप, दादा की जायदाद जो 250 बीघे अर्थात 150 एकड़ के लगभग ज़मीन जो शहर के निकट थी, वापिस दिलवा सकता हूं। मेरी माता का हृदय बहुत विशाल था, उन्होंने कहा कि इतने वर्षों से जिन रिश्तेदारों का बाल बच्चा उस ज़मीन पर पल रहा है, मैं उनकी रोटी खोंसकर अपने बच्चों को नहीं दे सकती।

जब मेरे बाप, दादा नहीं रहे, तो हम कितनी देर जीएंगे, मैं उन बच्चों के मुंह से निवाला नहीं खो सकती, जो इतने वर्षों से उस पर पल रहे हैं। उनका बहुत विशाल हृदय था। उनके सारे जीवन पर दृष्टी डालते हुए कितने ही घाटे मेरे सामने आते रहे हैं, कि कई बार मां ने बड़े बड़े आर्थिक घाटों और हानियों को बहुत सहजता से सहन किया और भुला दिया, जो आम आदमी के लिए सारी उमर के लिए जानलेवा उलझने बन जाते हैं।

ऐसी विशाल हृदय की मालिक मां का पुत्र होने पर मुझे फख़र हैं, मैं सदा ही गुरूमहाराज की कृपा से उनकी चरण धूल में मत्था टेककर तृप्ति पाता हूं और दिल खिल जाता है।

बलदेव सिंह

चण्डीगढ़ में माता – पिता सम्बन्धी विशेष साधन

चण्डीगढ़ 3154 सैक्टर 21-डी में हमेशा की तरह ईतवार को जैसे अकसर मनाया जाता है, माता-पिता के सम्बन्ध में 9.30 बजे विशेष साधन श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सम्पन्न किया। इस सभा में पंचकूला से सुभाष जी अग्रवाल अपने पारिवारिक 7 जनों को लेकर पहुँचे। इंडस्ट्रियल एरिया से श्रीमान सुनील दत्त जी, दड़वा में श्रीमान मधूसूदन जी और जलधर जी, 7 सैक्टर से रिटायरड डारैक्टर श्री एस. एस. मदान साहिब, डाक्टर V.C. Khera साहिब डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों, श्री सुखजिन्द्र जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी, श्रीमती सुरजीत बराड़ जी, शामिल हुए। सबसे पहले महिमा विषयक भजन गाया गया, यह भजन सुनील दत्त जी ने गाया। फिर गुरू महाराज की छवि द्वारा अर्चन किया। सबने खड़े होकर देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की और उनके बाद बहुत भावपूर्ण शब्दों में सभापति जी द्वारा सहायप्रार्थना की गई। उसके बाद "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" नामक भजन का गान श्री जगदीष जी ने किया, जो बहुत भाव पूर्ण आवाज़ में गाया।

उसके बाद सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अज़मत का वर्णन किया, उनकी अद्भुत सम्बन्धों की शिक्षा के विषय में बताया उनकी शिक्षा है कि धर्म सम्बन्धों में है। हम पापी वा धर्मी सम्बन्धों में ही बनते हैं। हम स्वार्थ को लेकर सम्बन्धों में जुड़ते हैं। स्वार्थ की पूर्ति न होने पर हम लड़ पड़ते हैं, दूर हो जाते हैं। सभापति जी ने माता-पिता के उपकारी रूप को दिखाने की कोशिश की। माता पिता हमारी जड़े हैं। हम जो कुछ भी हैं, माता पिता की देन है। हमारा शरीर, हमारा रंगरूप, अक्ल, समझ, हमारे व्यवहार, हमारे संस्कार, हम सब माता पिता से प्राप्त करते हैं। फिर श्रद्धा से भरकर अपनी मां की कुर्बानियों और अपनी ज़हालत का ज़िकर किया। अपने सौभाग्य का वर्णन किया कि देवात्मा ने मेरा मां के प्रति नज़रीया ही बदल दिया। गुरू महाराज ने किस प्रकार के सरवण कुमार जैसे पुत्र बना दिए। सरदार भाई अतरसिंह जी कैसे तहसीलदार होकर माता-पिता के पांव स्वयं धोते थे, कंवर दविन्द्र सिंह जी का व्यवहार अपने पिता के प्रति कैसे बदला। यह ऐसे सुन्दर दृश्यों ने बहुत अच्छा मण्डल बना दिया।

एक धर्म सम्बन्धी ने अपनी माता की कुर्बानियों और अपनी नलायकियों का भरे दिल से रुदन करते हुए वर्णन किया। फिर जगदीश जी ने फूलों के हारों द्वारा अपने माता पिता का अर्चन किया और फिर सुभाष जी ने अपने माता पिता की तस्वीरों पर फूल मालाएं चढ़ाई। उनके बच्चों ने भी हारों द्वारा माता-पिता का सन्मान किया, सबने अपने माता-पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। कुछ जन हार घर ले गए ताकि अपने माता-पिता का अर्चन कर सकें। 400 रु० दान प्राप्त हुआ, बहुत सुन्दर मण्डल बना। पूजनीय भगवान की जय ध्वनि से यह प्रोग्राम समाप्त हुआ। सब उपस्थित जनों को मिष्ठान दिया गया।

एक हाजरीन

मात – पिता एवं सन्तान दिवस

8 - 1 - 2017 हर साल की तरह इस बार भी डा० खेड़ा कोचिंग सेंटर चण्डीगढ़ में 14 वें माता पिता संतान दिवस का आयोजन सैक्टर 23 के बाल भवन में किया गया। देश के विभिन्न उच्च मेडिकल एवं इंजीनियरिंग संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे डा० खेड़ा कोचिंग सेंटर के पूर्व छात्र एवं वर्तमान छात्र अपने अभिभावको संग इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। नगर निगम के मुख्य अभियंता एन. पी. शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए।

कार्यक्रम का आंरभ एक बड़े ही मोहक समूहिक गीत के साथ हुआ। "मात पिता का प्यार अनोखा" गीत जिसमें माँ बाप और बच्चों के अनोखे प्यार को स्वरों की ध्वनि में बांध कर पेश किया। एक और बड़ा ही प्यारा गीत "कैसे माता पिता के उपकार सुनाएं हम" द्वारा माता पिता के उपकारों को बड़े ही प्यारे शब्दों में गा कर समां बाँध दिया। इसके पश्चात् एक नाटक "स्वार्थ एवं त्याग" पेश किया गया जिसके माध्यम् से एक आज्ञाकारी तथा एक दुष्ट पुत्र का पात्र दिखाया गया। जिसमें एक पुत्र का अपने जन्मदाता के प्रति बलिदान राम के रूप में तथा क्रूरता औरंगजेब के रूप में दर्शायी गई।

मधुर और दिल को छू लेने वाला गीत "माँ तू नहीं होगी तो बता" के माध्यम् से अपनी माँ के प्रति अपने प्यार और श्रद्धा का वर्णन किया। गीत " पापा बहुत याद आते हैं" में बच्चो का अपने पिता के प्रति दबा हुआ प्रेम महसूस किया गया और सबकी आँखें नम हो गईं। एंकाकी "अनदेखा बलिदान" में दर्शाया गया कि माँ बाप का फर्ज़ सिर्फ उन्हें पैदा करना ही नहीं बल्कि उनकी अच्छी परवरिश करना तथा उनके साथ समय बिताना भी है। साथ ही यह भी दिखाया गया के अपने फर्ज़ निभाते हुए माता पिता ना जाने कितने ऐसे बलिदान कर जाते हैं, जो बच्चों को कभी दिखाई नहीं देते। फिर मुख्य अथिति द्वारा सबको संबोधित किया गया जिसमें उन्होंने आधुनिक तकनीक को खुद पर हावी ना होने देने की बात की। साथ ही उन्होंने अपनी गलतियों से सीखने की शिक्षा दी और अध्यापकों का धन्यवाद करना सिखाया क्योंकि उन्ही के द्वारा हमें हमारी गलतियों का पता चलता हैं। डा० खेड़ा चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर के निर्देशक ने सभी अभिभावको को अपने बच्चों का आदर्श बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने 'श्रद्धा' और 'कृतज्ञता' की भिन्नता को उदाहरणों सहित स्पष्ट किया। इन उदाहरणों में एक कहानी तथा उन्हीं की जिन्दगी के कुछ पल शामिल थे। उनके इन शब्दों ने सभी के मन में भाव उत्पन्न किया कि दूसरों द्वारा किए गए उपकारों को हमेशा महत्व देना चाहिए। साथ ही उनके लिए हमें वह सब करना चाहिए जो भी हम करने योग्य हों। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने डा० खेड़ा, मुख्य अथिति, प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए बताया कि कैसे बदलते समय के साथ लोगों का प्रणाम करने का तरीका भी बदला तथा प्रणाम कैसे करना चाहिए। इसके पश्चात् एक छात्रा ने अपनी मधुर आवाज़ में गीत "जब तू पैदा हुआ" पेश किया जिसने सबका ध्यान एक बढ़ते बच्चे का अपने माता पिता के प्रति गैरज़िम्मेदार व्यवहार की ओर केंद्रित किया। एक एंकाकी द्वारा यह दिखाया गया कि कैसे दिन रात माँ निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा में लगी रहती

है, और बदले में उसे कुछ नहीं मिलता। इसके अंत में कुछ बच्चों ने अपनी गल्तियाँ स्वीकारते हुए अपने माता पिता से क्षमा मांगी। सुरीले स्वर में एक भावुक गीत "माँ प्यारी माँ" एक छात्रा द्वारा पेश किया गया जिसने सबका मन मोह लिया। अंत में डा० खेड़ा ने सभी का अभिनन्दन किया। सभी प्रतिभागियों की मेहनत को सराहा तथा मुख्यअतिथि का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम पर विराम लगाया।

एक हाजरीन

मां बनकर देखो

(1)

जेब खर्च भले ही पिता देते हों, लेकिन मुसीबत में पैसे तो मां से ही लेने पड़ते हैं। वे भले ही न कमा रही हों, पर अगर घर खर्च की कमान उनके हाथ हैं, तो चिंता की कोई ज़रूरत नहीं। कम पैसों में घर चलाने की कला सिर्फ़ मां ही जानती हैं। कई बार पिज़्ज़ा पार्टी के लिए मां सख़्त मना कर देती हैं या पिकनिक, खिलौना, ड्रेस के लिए भी इंकार कर देती हैं। उनकी असहमति पर हम सोचते हैं, मां हर चीज़ के लिए मना ही करती हैं। मेरी खुशी से उन्हें कोई मतलब नहीं।

आमतौर पर पिता चीज़ें दिलवाते हैं, सो लगता है कि सिर्फ़ वही सच्चे हितैषी हैं। कई बार बच्चे सही-ग़लत का आकलन नहीं कर पाते। इसलिए मां को अपना विरोधी समझ बैठते हैं। बच्चों के लिए क्या ठीक हैं, क्या नहीं, यह दूरदर्शिता मां में ही हो सकती हैं। आज आप कमा रहे हो, तब भी पैसे कहां चले जाते हैं, पता नहीं चलता। मां से पूछकर देखिए, इतने कम पैसों में आपने हमारी सारी ज़रूरतें कैसे पूरी की? क्या आपको पता है, आपके गैरज़रूरी ख़र्चों के लिए उन्होंने कभी अपनी आकांक्षाओं और इच्छाओं की परवाह नहीं की....।

(2)

नाश्ता और दो वक्त का भोजन तैयार करना। सबके लिए अलग-अलग चीजें बनाने में मां को महारत हासिल है। सालों से वे नियम से सबके लिए खाना बना रही हैं। उन्हें सबकी पसंद नापसंद के साथ सेहत का भी ख़्याल रहता है। किसे मीठा-तीखा पसंद है, तो किसे कम शक्कर वाली चाय। नाश्ते में थोड़ी देर हो तो घर में कोहराम मच जाता है। या फिर खाने में थोड़ा नमक ज़्यादा हो तो सवालों की बौछार हो जाती हैं, 'क्या मां! रोज खाना बनाती हो, फिर भी नमक का अंदाज़ नहीं है। सब्जी में तेल ज़्यादा है, मिर्च ज़्यादा है। मुझे ये पसंद नहीं है.... वगैरह-वगैरह।'

क्या कभी आपने मां के लिए नाश्ता या लंच तैयार किया है? या सबको खाना खिलाकर खुद खाने वाली मां से कहा हैं, 'आज साथ में खाना खाएंगे, चाहे खाना ठंडा न हो जाए।' क्या कभी कभी खाने के लिए उनकी दिल से तारीफ़ की, उन्हें धन्यवाद दिया है? क्या कभी मां के लिए अनौपचारिकता भरा कोई उपहार दिया या रसोई में उनकी मुश्किलें कम करने में थोड़ी मदद की? आप जानते हैं, सालों से मां का नाश्ता सिर्फ़ एक कप चाय ही है।

(3)

बुखार होने पर मां रात-रात भर गीले पानी की पट्टियां माथे पर रखती थीं। डाक्टर को दिखाने के साथ ढेरों घरेलू नुस्ख़े अपनाने, नज़र उतारने जैसे

टोटके भी मां ने आजमाए। क्या कभी मां के बीमार पड़ने पर इस तरह से उनकी देखभाल की है आपने? आज जब वे कहती हैं, 'बाजार में जाओ तो दवाई ले आना,' तब उनकी बात को सरलता से ले लेते हैं। कभी सुकून से पांच मिनट पास बैठकर पूछा कि मां, तबियत अच्छी न हो तो दफ़्तर से छुट्टी ले लूं? किसी दूसरे डॉक्टर को दिखा दें?

शाम को जब आप घर वापस आते हैं तब पानी देते हुए मां धीरे से पूछती हैं, 'बेटा, दवा ले आए क्या?' 'अरे मां भूल गया, कल पक्का ला दूंगा।' आपके इस जवाब पर भी वे अपना दर्द छुपाकर हंसते हुए कह देती हैं, 'ठीक है बेटा, कोई बात नहीं, कल ले आना।' बीमारी की हालत में भी वे घर के सारे काम निबटाती हैं। मां की तबियत तो रोज ही ख़राब रहती है, ऐसा सोचकर हम बचते रहते हैं। विचार कीजिए यदि मां घर में न हो और आपकी तबियत ख़राब होने पर खाना बनाने से लेकर घर के सारे काम निबटाने की नौबत आ जाए?

(4)

बेटा, तुम अपना मोबाइल घर पर भूल गए थे, सुबह दोस्त का फोन आया था। 'मां आप बग़ैर पूछे मेरा फोन क्यों उठाती हो। और अब जाकर बता रही हो! ये क्या बात हुई।' दिखावटी गुस्से में मां कहती है, 'ठीक है, आगे से तेरा फ़ोन नही उठाऊंगी।' आपकी खुशी और सुख के लिए वो दिन रात लगी रहती है। लेकिन दोस्त का एक फोन मिस होने पर मां ग़ैर ज़िम्मेदार लगने लगती है।

किसी पार्टी में मां को साथ नहीं ले जाते। दलील होती है कि आप आजकल के तौर-तरीके नहीं जानती। दोस्तों के सामने अच्छा नहीं लगेगा। क्या कभी सोचा है कि ये व्यवहार उन्हें कितना बुरा लगता होगा। अगर वे भी कह दें, 'तुम्हारे नतीजे अच्छे नहीं हैं, इसलिए तुम्हें कहीं लेकर नहीं जाएंगे। तुम्हारी वजह से समाज में प्रतिष्ठा कम हुई है।' स्कूल कॉलेज या कहीं बाहर जाने से कपड़े-जूते तैयार करने की सारी जवाबदारी मां की ही है? यदि वे भी कह दें कि अपने काम खुद करो.... ग़ैर ज़िम्मेदार व्यवहार से बाज आओ तो?

(5)

शूटिंग पर या विदेश जाने से पहले अमिताभ बच्चन मां से आशीर्वाद ज़रूर लेते थे। बीमार होने के बावजूद मां तेजी हमेशा उनसे सवाल करती- 'तुमने नाश्ता किया, घर वापस कब लौटोगे?' अमिताभ भी सारे जवाब शांति से देते। एक साक्षात्कार में उन्होंने मां के साथ जुड़ी मीठी यादों को सांझा किया है। जब अपनी व्यस्त ज़िंदगी के बावजूद अमिताभ इन सवालों पर खीझते नहीं, तब हम क्यों अपनी मां के सवालों को चुभन की तरह लेते हैं।

घर देर से पहुंचे मां ने पूछा, 'इतनी देर क्यों हो गई?' उनकी व्याकुलता नज़रअंदाज करते हुए आपने पलटकर जवाब दे दिया, 'हां देर हो गई, तो क्या हो गया!' कभी मां के घर से बाहर होने पर ऐसी बेचैनी महसूस हुई? उनके सवाल में हमेशा टोकाटाकी दिखी, पर उनके मनोभावों पर गम्भीरता से विचार नहीं किया। उम्र चाहे चार साल हो या 40, संतान की सुरक्षा को लेकर मां सी व्याकुलता क्या आपको कभी मां के लिए महसूस हुई? संतान के घर पहुंचने पर मां को जो सुकून.... कुशलक्षेम जानकर जो इत्मीनान मिलता है, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

(6)

मां, कपड़े नहीं मिल रहे.... मां, मोज़े नहीं मिल रहे... कहां रख दिए आपने? दूर से चिल्लाकर मां कहती हैं, 'अच्छी तरह देखो, वहीं रखे हैं।' हम हर छोटे से छोटे काम के लिए मां पर निर्भर रहते हैं। घर के ढेरों काम के बीच भी वे आपकी हर चीज़ का ख़्याल रखती हैं। मां का यह प्रबंध सिर्फ़ घर के कामकाज तक ही सीमित नहीं है। कहां कितना खर्च करना है, यह मां से बेहतर कौन जानता है। जब किसी काम से निराशा हाथ लगती है, भावनात्मक रूप से खुद को अकेला पाते हैं, तब मां की थपकियां और लाड हमें फिर से खड़ा कर देता है।

पर क्या हम मां की भावनाओं की कद्र करते हैं। कोई फ़ैसला लेने से पहले उनसे सलाह लेते हैं? भले ही उनके पास डिग्री न हो, किताबी ज्ञान न हो, पर अनुभव के मामले में वे हमसे कई गुना आगे हैं। हम उनकी सलाह को दरकिनार करते हुए कह देते हैं, 'मां, आप रहने दो, आप कुछ नहीं जानती।' क्या अपने विचार किया इन शब्दों का उन पर क्या असर पड़ता होगा। मां से हमें जिंदगी मिली है, उनका जाने अनजाने अपमान कर खुद की नज़रों में तो न गिरें।

(7)

स्वामी विवेकानंद से एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया, 'मां की महिमा संसार में क्यों गाई जाती है? स्वामी जी बोले, 'पांच सेर वजन का एक पत्थर किसी कपड़े में लपेटकर पेट पर बांध लो और 24 घंटे बाद मेरे पास आओ।' वह व्यक्ति पत्थर बांधे हुए दिनभर काम करता रहा, लेकिन हर क्षण उसकी परेशानी और थकान बढ़ती गई। वह स्वामी जी के पास आकर बोला, 'इस पत्थर को अब और नहीं रख सकूंगा।'

इस पर वे बोले, 'पेट पर यह बोझ तुमसे कुछ घंटे भी नहीं उठाया गया और मां अपने गर्भ में, शिशु को पूरे नौ माह तक लिए-लिए काम करती है। मां के सिवा दूसरा कोई इतना धीर और सहनशील नहीं है।'

जरा सी डांट में खाना नहीं खाना, कुछ कह देने पर पलटकर जवाब दे दिया- थोड़ी सी विषम परिस्थिति में हमारा धैर्य जवाब दे देता है। अपनी मां के बारे में सोचिए...।

माँ की दुआएं

क़तरा-क़तरा बहते हैं,
तन्हा-तन्हा रहते हैं
बादल सबकुछ जाने है
कच्चे घर क्या सहते हैं
मां की सिर्फ़ दुआएं हैं
किस्मत वाले लेते हैं।
माता पिता को दर्द देते हैं।
फिर भी वह अपना कहते हैं
मीठे-मीठे बोल कहो
पर वह कड़वे बोल भी सहते हैं।

देने का सुख

कहते हैं न कि जीवनचक्र चलता रहता है। यानी आज जो आप बो रहे हैं, वही कल काटना पड़ेगा। अभिभावक और संतान के रिश्ते पर यही बात लागू होती है। अगर आज आप अपने माता - पिता को उनकी अहमियत का अहसास कराएंगे, तो तय मानिए कि आपकी संतान भी कल यही आपके साथ दोहराएंगी।

माता पिता हमारे बचपन के इकलौते आधार हैं। उन्हें समय देना आपका कर्त्तव्य है। ऐसा करने से आपको और आपके माता - पिता को सुख - शांति की अनुभूति होगी। यह संतोष ही आपकी जमा पूंजी है।

सुबह की चाय मां

आज क्यों न सुबह की चाय अपने माता - पिता के साथ बैठकर पीएं। वे हर रोज आपसे कुछ कहना चाहते होंगे, लेकिन आपकी व्यस्तता के कारण कुछ कह नही पाते। जिंदगी और दुनियादारी के बारे में उनके अनुभवों, विचारों को खामोशी से सुनें। बच्चों से भी ऐसा ही करने को कहें।

पसंदीदा नाश्ता बनाएं

माता - पिता के लिए उनका पसंदीदा नाश्ता बनवाएं। नाश्ते की टेबल पर उनसे पूछें कि उन्हें कोई परेशानी तो नहीं है, क्या रात को अच्छी नींद आई, वक्त पर दवाएं लीं। उनकी परेशानियों को समझने की कोशिश करें। पूछें कि वे क्या चाहते हैं। अपने विचार न थोपें और न ही कुतर्क करें।

उन्हें आउटिंग पर ले जाएं

आज संडे हैं, आपके पास समय की कमी नहीं। लिहाजा दादा - दादी को वीआईपी ट्रीटमेंट दें। घर पर एक गेट - टूगेदर आयोजित करें। इसमें उनके पुराने दोस्तों को भी बुलाएं। या फिर पिकनिक या आउटिंग पर ले जाएं। साथ में पूरे परिवार को ले जाना न भूलें। माहौल को हल्का - फुल्का बनाए रखने के लिए कामकाज या परिवारिक समस्याओं की बात छेड़ने की जगह उनके बीते दिनों को याद करें।

पसंदीदा फिल्म दिखाएं

आज घर पर ही वक्त बिताना हो तो माता - पिता की कोई पसंदीदा फिल्म की सीडी लेकर आएं। पूरे परिवार के साथ बैठकर देखें। याद करें, तब आप कितने छोटे थे, तब का माहौल कैसा था। कितना मजा आया था, आपको फिल्म देखने में।

रहें सेहतमंद

माता - पिता के साथ वक्त बिताना परिवार की खुशहाली के साथ आपकी सेहत के लिए भी अच्छा है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों की रिसर्च बताती है कि इससे आपका तनाव और कोलेस्ट्रॉल लेवल दोनों घटेंगे। दिल को सुकून मिलेगा, साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोध की क्षमता भी मजबूत होगी।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

जो मां के पास रहता है.... (कविता)

अपनी सांसें वो मेरी सांसों में रख देती है
लोरियां मीठी मेरे ख़्वाबों में रख देती है
जागती रहती है मां मुझे सुलाने के लिए
खुद की नींद भी मेरी आंखों में रख देती है

मन में सारी घुटन छिपाकर चेहरे से छलती थी मां
घर के ख़ाली चूल्हे में ईंधन जैसी जलती थी मां
ब्याह दीदी का मेरी नौकरी बाबूजी की बीमारी
दुख के सारे गलियारों में हंस - हंस कर चलती थी मां

अपने आंचल में जब मुझे छिपा लिया मां ने
जमाना कुछ भी नहीं है बता दिया मां ने
मैं डर रहा था कहीं बुझ न जाए तूफां में
मेरा चराग़ हवा में जला दिया मां ने

शहर में तू तो बनके बहुत ख़ास रहता है
मगर वो गांव का पीपल उदास रहता है
अमीर लगता है मुझको वो सारी दुनिया से
वो एक आदमी जो मां के पास रहता है

गोद में लेटकर जिसकी ज़माना देखा है
उसका चेहरा मेरी आंखों में बसा रहता है
इसलिए तुमको मेरे अश्क़ नहीं दिखते हैं
मां का आंचल मेरी आंखों पे रखा रहता है

शोक समाचार

बहुत ही शोक और बड़े घाटे की बात है कि देव समाज के बहुत ही वरिष्ट और सबसे पुराने साथी सेवक माननीय श्रीमान खरैयती लाल जी वोहरा का 101 वर्ष की उमर में दिल्ली रजिन्द्र नगर में 10 जनवरी की रात को देहान्त हो गया है। वह आख़िरी सौभाग्यवान जन थे, जिन्होंने परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साक्षात दर्शन किए थे और उनकी वाणी भी सुनी थी। वह बहुत पुराने और समाज की अग्रणी कतार में शामिल थे। श्रद्धेय कनल जी और फिर श्री काका जी (S.P. Kanal Sahib) के साथ उनका बहुत गहरा सम्बन्ध था। दिल्ली में देव समाज के पब्लिक स्कूलों के सारी उमर रूहेरवां रहे। देव समाज के साहित्य को सुन्दर से सुन्दर (विशेष कर अंग्रेजी में) रूप रेखा देने, बढ़ाने और प्रसार करने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया है, जिसके लिए उन्हें सदा याद किया जाएगा।

उनका सस्कार लोधी नगर करेमेटोरियम में 12 जनवरी 2017 को किया गया। 15 जनवरी को दिल्ली देव समाज के स्कूल में उनकी श्राद्ध की सभा श्रीमती कुमारी सत्यावती जी, वरिष्ट कर्मचारिणी ने करवाई।

उनकी लम्बी, कौमा जैसी ही हालत में, जो बेसुधि जैसी ही थी, उनकी सेवा उनकी पुत्री अंजू सचदेवा, उनकी छोटी पुत्रवधु फरीदा जी और बड़ी पुत्रवधु सुमन जी और उनके दोनों पुत्रों देव - करन जी और छोटे बेटे समेत सबने स्नेह और सम्मान के साथ करके अपना भला किया और पूरा तप कमाया। हम माननीय वोहरा जी के सदा के लिए बिछुड़ जाने पर उनके पुत्रों, पुत्रियों, दोनों पुत्र वधुओं के प्रति संवेदना प्रगट करते हैं। बिछड़ने वाली आत्मा के भले और शान्ति की कामना करते हैं।

बलदेव सिंह

जीवन में गुणचिन्तन और उपकार स्मरण की आवश्यकता

एक स्त्री थी जिसके एक धर्मपति और तीन नौजवान बेटे थे। वह उन की बड़ी सेवा करती थी। उनके लिए अच्छे से अच्छा खाना तैयार करके देती थी और उन को खुश रखती थी। बीस साल तक वह उनकी दिली लगाव से सेवा करती रही, लेकिन वह हैरान थी कि उसके धर्मपति जी और उसके बेटे उसकी इस सेवा का कोई समादर नहीं करते।

एक दिन उसने खाने के कमरे में मेज़ पर थालियां लगा दी और उनको साफ़ कपड़े से ढक दिया और अपने धर्म पति जी और नौजवान बेटों से कहा कि खान खा लें। वह खाने के कमरे में गए। थालियों पर से कपड़ा उठाया। उनके गुस्से और परेशानी की कोई सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि थालियों में घास रखा हुआ है। लड़कों ने कहा मां आज आप ने यह हमारे साथ क्या मज़ाक किया है? उनकी मां ने जवाब दिया कि क्या तुम्हें घास दिखाई देता है और तुम उसको पहचानते हो? मैं बीस साल से अच्छे से अच्छे पदार्थ तैयार करके तुम्हें देती रही हूं, लेकिन वह तुम्हें कभी दिखाई नहीं दिए और उनकी तुम ने कभी सराहना नहीं की। मेरा ख्याल था कि तुम्हें थालियों में कुछ नज़र नहीं आता था। लेकिन अब मुझे पता लगा है कि नज़र तो आता है। लेकिन अगर तुम्हारी आंखों को घास नज़र आ सकता है तो सुन्दर और सुस्वादु पदार्थ क्यों नहीं नज़र आए? घास को देखकर तो तुम्हें गुस्सा चढ़ गया, लेकिन बीस साल तक थालियों में अच्छे - अच्छे पदार्थ देखकर और उन्हें खाकर तुम ने कभी सराहना और कृतज्ञता का शब्द तक मुंह से नहीं निकाला और अपने किसी हर्ष का प्रकाश नहीं किया।

धर्म पति और उनके लड़के बहुत शरमिन्दा हुए और उन्होंने कहा कि आप सच कहती हैं। वाक़ई हम नाशुकरे पशु हैं। आज आप ने हमारी आंखें खोल दी हैं, जिसके लिए हम आप का धन्यवाद अदा करते हैं। यह घटना एक सबक़ सिखाती है कि किसी में गुण देखकर उसकी सराहना करनी चाहिए और किसी से सेवा पाकर उसका धन्यवाद अदा करना चाहिए।

एक भद्र जन योरप के दौरे से वापिस आए, तो उन्होंने अपना एक ज़ाती तजरबा बयान किया। उन्होंने कहा कि मैं एक होटल में गया। होटल के नौकर ने बहुत अच्छी तरह से खाना खिलाया। लेकिन जब अगले रोज़ मैं फिर वहीं गया, तो उसी नौकर ने मुझे खाना परोसने से इन्कार कर दिया। मैंने होटल के मैनेजर से उस नौकर की शिकायत की। मैनेजर साहब ने दूसरे नौकर को मेरी सेवा पर लगा दिया और उस पहले नौकर से कारण पूछा कि तुम ने एक भद्र जन को खाना परोसने से इनकार क्यों किया? उस नौकर ने कहा - जनाब मैं ऐसे आदमी की सेवा करना नहीं चाहता जो सेवा पाकर कोई धन्यवाद का शब्द भी मुंह से न निकाल सकता हो। मैंनेजर ने मुझसे कहा कि यहां किसी से एक गिलास पानी पीकर भी उसका धन्यवाद अदा न करना अशिष्टाचार समझा जाता है। आप ने सेवा पाकर इस नौकर का धन्यवाद अदा नहीं किया होगा। उस दिन के बाद से उस भद्र जन ने बताया कि मैंने यह नियम बना लिया कि किसी से मामूली सेवा पाकर भी उसका शुकरिया अदा करना है, चाहे सेवा करने वाला कोई नौकर हो या कोई तांगे वाला ही क्यों न हो।

एक दिन मैं कालिज में धर्म शिक्षा दे रहा था। मैंने कुछ लड़कियों से पूछा कि क्या तुम ने अपने

माता पिता को उपकार स्मरण के पत्र लिखे हैं? उन्होंने हंस कर कहा कि क्या हमारे माता पिता को पता नहीं है कि वह हम पर उपकार कर रहे हैं, क्या यह आवश्यक है कि हम उनको याद दिलावें कि आप हम पर उपकार कर रहे हैं? एक लड़की ने तो कहा कि मैंने आप के कहने के अनुसार अपनी माता जी को उनकी अनगिणत सेवाओं के बदले धन्यवाद का पत्र लिखा। मेरा माता जी मेरे पत्र को पाकर बहुत हंसी और उन्होंने मुझे लिखा कि ऐसे धन्यवाद के पत्र लिखने में अपना समय मत खोया करो। तुम्हारा यही बहुत बड़ा धन्यवाद है कि तुम अपनी पढ़ाई दिल लगा कर करती रहो। उसकी मां की ऐसी बात सुनकर मैं हैरान रह गया। उसको शायद यह बोध ही नहीं था कि कृतज्ञता एक क़ीमती गुण है और नाशुकरापन एक भयानक दोष है।

ऐसे माता पिता अवश्य हैं, जो अपने बच्चों में ऐसे बोधों के पैदा होने की आवश्यता और क़ीमत को महसूस करते हैं। एक पैंशनयाफ़्ता सरकारी नौकर ने अपनी दो लड़कियों को हमारी संस्था में दाखिल कराया। माता पिता सन्तान ब्रत के दिनों में दोनों लड़कियों को हमारी संस्था में दाखिल कराया। माता पिता सन्तान ब्रत के दिनों में दोनों लड़कियों ने अपने माता पिता को उपकार स्मरण के पत्र लिखे। उनके पिता का संस्था के हैड के नाम पत्र आया जिस में लिखा था कि हमें अपनी लड़कियों के उच्च असरों से भरे हुए पत्र मिले हैं। इन पत्रों को पढ़कर मेरा और मेरी धर्म पत्नी की आंखों से आंसू जारी हो गए । हम आप का बहुत धन्यवाद अदा करते हैं कि आप ने हमारी बच्चियों में ऐसे भाव पैदा कर दिए हैं। बच्चों को अपने माता पिता नज़र ही नहीं आते। और ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं, जो अपने माता पिता के उपकारों को स्मरण करते हों।

(पी. वी. कनल)

बाकी पृष्ठ 2 का

प्रत्येक सन्तान के लिए आवश्यक है कि वह अपने माता - पिता के सम्बन्ध में अपने आपको कृतज्ञ प्रमाणित करे। जहां तक सम्भव हो अपने माता - पिता के रोग और दुःख और उनकी विपद - ग्रस्त और असहाय अवस्था में उनकी आवश्यक सेवा, ईलाज वा सहाय करे। उनकी शारीरिक वा अन्य आवश्यकताओं को अपनी सामर्थ्य अनुसार, तन, मन और धन आदि के द्वारा पूरी करे। अपने माता - पिता के भिन्न उनके किसी आश्रित मनुष्य वा पशु वा पौधे की भी उचित रूप से सेवा करे। अपने वंशीय पूर्वजों से जिन जिन सद्गुणों को लाभ किया हो, उनकी रक्षा वा उन्नति करे। माता - पिता वा वंश की प्रत्येक उत्तम प्रथा वा मर्य्यादा की भली भाँत रक्षा करे। अपने माता - पिता वा वंश के द्वारा प्राप्त प्रत्येक सम्पति की, जहां तक सम्भव हों, उचित रूप से रक्षा वा उन्नति और उसका उचित रूप से व्यवहार करे। माता - पिता द्वारा जीते जी वा उनके देहान्त के उपरान्त उनके द्वारा स्थापन किए हुए किसी साधारण हितकर काम की, जहां तक सम्भव हो रक्षा, और उन्नति करे।

माता - पिता को अपनी अनुचित क्रिया से यदि दुख वा कलेश पहुँचा हो, तो उसका उचित वा यथेष्ट परिशोध करके अपने सम्बन्ध को पवित्र करे। माता - पिता के लिए उचित रूप से मंगल कामना करे।

सन्तान के लिए आवश्यक है कि अपने माता - पिता, अपने वंश की किसी उत्तम मर्यादा को अपनी अनुचित क्रिया से हानि न पहुँचाए।

यदि माता - पिता और सन्तान परम पूजनीय भगवान के इन आदेशों की कुछ भी पालना कर सकें, तो यह सम्बन्ध स्वर्गिय बन सकता है।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

सम्वत् 2069 – 2070 विक्रमी सन् 2017 ई.

स.	वार्षिक साधनों के विषय	साधन का विषेश दिन	दिन
1.	मात – पिता और सन्तान के सम्बन्ध में	15 जनवरी	रविवार
2.	भाई बहनों के सम्बन्ध में	1 फरवरी	बुद्धवार
3.	देव समाज के सम्बन्ध में	19, 20, 21 फरवरी	रविवार, सोमवार, मंगलवार
4.	पति – पत्नी के सम्बन्ध में	12 मार्च,	रविवार
5.	उद्भिद जगत के सम्बन्ध में	28 मार्च	मंगलवार
6.	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	12 अप्रैल	बुद्धवार
7.	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	9 मई	मंगलवार
8.	स्वदेश के सम्बन्ध में	5 जून	सोमवार
9.	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	8, 9 जुलाई	शनिवार, रविवार
10.	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में	5, 6, 7 अगस्त	शनिवार, रविवार, सोमवार
11.	पशु जगत के सम्बन्ध में	29 अगस्त	मंगलवार
12.	परलोक के सम्बन्ध में	19 सितम्बर	मंगलवार
13.	स्वजाति के सम्बन्ध में	30 सितम्बर	शनिवार
14.	भौतिक जगत के सम्बन्ध में	19 अक्तूबर	वीरवार
15.	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	4 नवम्बर	रविवार
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	3, 4, 5, 6 दिसम्बर	शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts